Concept Note
तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारतीय लोकनाट्य : लोक की सांस्कृतिक विरासत का वाहक

Indian folk theatre: Bearer of the Cultural Heritage of the People

_____ 2024

Concept Note

प्रस्तावित संगोष्ठी का परिचय और सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

लोकनाट्य भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना की एक महत्त्वपूर्ण विधा रही है। भारतीय लोक लोकनाट्यों में अपनी जीवन -शैली का विस्तार पाता रहा है। लोकनाट्य भारतीय लोक का उद्गाता , मार्गदर्शक और अपरिहार्य हस्तक्षेप रहा है। "अनादिकाल से मनुष्य अपने आनंदकाल के समय अंग -भंगिमाओं का जो अनियोजित प्रदर्शन करता आ रहा है , वहीं धीरे-धीरे समष्टि के रूप में आयोजन -नियोजन द्वारा लोकनृत्यों का स्वरूप धारण करने लगा। जैसे-जैसे नृत्य अपनी आदि अवस्था से निकलकर उन्नत और सभ्य समाज का शृंगार बनने लगा वैसे -वैसे उसके साथ गीत नाट्य भी जुड़ने लगे और व्यवस्थित नृत्यनाट्य तथा गीतनाट्य का प्रादुर्भाव होने लगा।"[1]

पूर्व में लोकनाट्य ही लंबे समय तक मनोरंजन का एकमात्र साधन था। यह जीवंत विधा थी और गाँव के किसी सार्वजनिक स्थान पर चार तख्त डालकर या बुग्गियों का ही मंच तैयार करके चारों ओर से खुली स्टेज पर लोकनाट्य का मंचन किया जाता था। बेड़ेबंद के अलावा जनाने वेश में चार -पाँच पुरुष कलाकार , विदूषक, साजिंदे और अन्य सहायक कलाकार लोकनाट्य के मुख्य आकर्षण का केन्द्र होते थे। "लोक का अध्ययन बुद्धि का कुतूहल नहीं है। इसे बस एक और शास्त्र कहकर नहीं टाला जा सकता। लोक -संपर्क के बिना अन्य सब शास्त्र अधूरे हैं। लोक का अमृत जिस शास्त्र में नहीं मिलता , वह कितना भी पंडिताऊ हो , निष्प्राण रहता है। जो ज्ञान लोकहित के लिए नहीं वह अधूरा है , वह मानवी चिंतन का छूछा फल है। जो शास्त्र लोक के साथ नहीं जुड़ा, वह बुद्धि का छलावा है।"[2]

कौरवी क्षेत्र में लोकनाट्य के मुखिया को बेड़ेबंद ही कहा जाता है। हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में लोकनाट्य को 'सांग', ब्रज क्षेत्र में 'नौटंकी' और 'रासलीला', हिमाचल प्रदेश में 'करियाला', गुजरात में 'भवाई', राजस्थान में 'ख्याल' उड़ीसा में 'जात्रा' बिहार में 'बिरहा' या 'जट जटनी' आदि नामों से जाना जाता है। पूरे भारत में पिछले तीन सौ सालों का समय लोक के मनोरंजन की दृष्टि से लोकनाट्यों का ही रहा है।

---

[1] देवीलाल सामर लोकधर्मी प्रदर्शनकारी कलाएँ पृष्ठ 107

[2] डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल, लोकसाहित्य खंड, पृष्ठ 27

गाँवों में अधिकतर विद्यालय, धर्मशाला चौपाल और गऊशाला लोकनाट्यकारों की ही देन हैं। गांवों में सार्वजनिक महत्त्व की इमारतों के निर्माण में लोकनाट्य ही दान एकत्रित करने का एकमात्र माध्यम था। इस दृष्टि से भारत के नव निर्माण में लोकनाट्यों का अमूल्य योगदान है। आज भी अल्पाधिक रूप में गऊशालाओं के निर्माण के लिए लोकनाट्यकारों का ही सहयोग लेने का प्रचलन है। भिखारी ठाकुर, बाजे भगत, पं. लखमीचंद, महाशय दयाचंद मायना, पं. मांगेराम, राय धनपत सिंह निंदाना, चंद्रलाल बादी, मास्टर दयाचंद आजाद सिंघाना, मुंशीराम जांडली, रामकिशन व्यास, सेवाराम बखेता आदि लोकनाट्यकार लोकमानस के सहज चितेरे हैं। जहां एक ओर पौराणिक कथाओं और लोक में प्रचलित लोक कथाओं को आधार बनाकर लोकनाट्य-सृजन हुआ, वहीं अनेक लोकनाट्यकारों ने स्वकल्पित कथाओं को लोकनाट्य-रूप में ढाला। नवीन भावबोध के लोकनाट्यों में हमारे अपने समय की समस्याओं को भी चित्रित किया गया है , जिनकी प्रस्तुति लोक के अति अनिवार्य है। वर्तमान में भी लोकनाट्यों का सृजन अनवरत रूप में हो रहा है। अनेक कलाकार अब भी लोकनाट्यों का सृजन कर रहे हैं। किसी भी प्रदेश का लोकसाहित्य उसकी सांस्कृतिक धरोहर होता है , जिसका संरक्षण किया ही जाना चाहिए। लोकसाहित्य के माध्यम से हमें लोक को समझने में आसानी होती है। लोकनाट्य विधा को साहित्यिक रूप में सहेजने का काम बहुत विलंब से शुरू हुआ अनेक लोकनाट्य या लोकनाट्य-सर्जक मौखिक रूप में रह कर ही गुमनाम हो गए। उनके साथ ही उनका कृतित्व भी चला गया। इस संगोष्ठी के माध्यम से ऐसे लोक कवियों और लोकनाट्यकारों के साहित्य पर विस्तार से चर्चा की जाएगी।

उक्त संगोष्ठी में निम्न विषयों के अंतर्गत शोधपत्र आमंत्रित हैं -

लोकनाट्य : अवधारणा और स्वरूप

1. लोकनाट्य दशा एवं दिशा
2. लोकनाट्य और समाज
3. भारत के लोकमन के नवनिर्माण में लोकनाट्यों का महत्त्व
4. लोकनाट्य और लोक की जीवन-शैली
5. लोकनाट्य और दलित एवं स्त्री का संदर्भ
6. वर्तमान संदर्भों में लोकनाट्यों के मंचन की प्रासंगिकता
7. लोकनाट्यों में चित्रित लोक का सामाजिक पक्ष
8. लोकनाट्य का शिल्प-पक्ष
9. लोकनाट्य की रसात्मक अभिव्यक्ति
10. वर्तमान समय में लोकनाट्य-सृजन
11. अल्पज्ञात लोकनाट्यकार
12. लोकनाट्य-संपादन प्रक्रिया, पाठालोचन एवं चुनौतियाँ
13. लोकनाट्यों में पौराणिक संदर्भ

14. लोकनाट्यों में क्षेत्र विशेष का ऐतिहासिक संदर्भ
15. लोकनाट्य और आधुनिक सामाजिक समस्याएँ
16. बाजे भगत, भिखारी ठाकुर, पं. लखमीचंद, महाशय दयाचंद मायना, पं मांगेराम, चंद्रलाल बादी, राय धनपत सिंह निंदाना, पं. रामकिशन व्यास, महाशय छज्जूलाल सिलाना, मा. दयाचंद आज़ाद सिंघाना, देईचंद, पं. कृष्णचंद्र नादान, के साथ-साथ किसी भी अन्य लोकनाट्यकारों पर शोध-पत्र हो सकता है।

4. Objective of the Seminar

संगोष्ठी के लक्ष्य एवं उद्देश्य -

क. भारत सरकार लोक-संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए भरसक प्रयासरत है और लोकनाट्य लोक- संस्कृति की विरासत है। इस संगोष्ठी में इस सांस्कृतिक विरासत पर गंभीर विचार - विमर्श का लक्ष्य रखा गया है।

ख. पिछले कई वर्षों से लोकनाट्य विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों का हिस्सा बना है , जिससे इस विधा के प्रति शोधार्थियों का रुझान बढ़ा है। यह संगोष्ठी इस विषय के शोध को व्यवस्थित, वैज्ञानिक और व्यापक बनाने में सहयोगी होंगी।

ग. नृत्य, गायन, अभिनय, हास्य-व्यंग्य, सामाजिक शिक्षा आदि को समाहित किए होने के कारण लोकनाट्य एक समावेशी विधा है। अकादमिक धरातल पर इसका विश्लेषण इस संगोष्ठी के माध्यम से उपयोगी होगा।

घ. विभिन्न नामों और स्थानीय विशेषताओं के साथ लोकनाट्य भारत -भर की सामासिक संस्कृति की अभिव्यक्ति है। यह संगोष्ठी विविधतापूर्ण भारत में सामासिक संस्कृति विकास को नई दिशा देगी।

ड. वैश्वीकरण के तीव्र प्रभाव के कारण लोकनाट्य के सामने विलुप्ति की चुनौती खड़ी हुई है। इस संगोष्ठी के माध्यम से भारतभर में मौखिक रूप से प्रचलित लोकनाट्यों के संरक्षण , संकलन एवं संपादन के लिए शोधार्थियों को प्रेरित किया जाएगा।

च. इस संगोष्ठी के माध्यम से लोकनाट्य विधा को पुनः स्थापित करने की संभावनाएँ तलाशी जाएंगी।

छ. नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में स्थानीय लोककलाओं के महत्व पर बल दिया गया है। अध्यापकों और छात्रों के अभिविन्यास (orientation) के संदर्भ में यह संगोष्ठी बहुत प्रासंगिक है।